ॐ

आत्मसिद्धि (हिन्दी)

आत्मज्ञान सह मुनिपना, वे सच्चे गुरु होय ।
बाकी कुल-गुरु-कल्पना, आत्मार्थी नहिं कोय ।।३४।।
प्रत्यक्ष सदगुरु प्राप्ति का, गिने परम उपकार ।
मन-वच-तन एकत्व से, वर्ते आज्ञाधार ।।३५।।
एक होय त्रय काल में, परमारथ का पन्थ ।
प्रेरक जो परमार्थ का, वह व्यवहार समन्त ।।३६।।
यह विचार कर हृदय में, खोजे सदगुरु योग ।
काम एक आत्मार्थ का, दूजा नहिं मन-रोग ।।३७।।
कषाय की उपशान्तता, मात्र मोक्ष-अभिलाष ।
भव से खेद, प्राणी-दया, वहाँ आत्मार्थ निवास ।।३८।।
दशा न जब तक ऐसी हो, जीव न पाये योग ।
मोक्षमार्ग पाता नहीं, मिटे न अन्तर रोग ।।३९।।
आवे जब ऐसी दशा, सदगुरु-बोध सुहाय ।
बोध से सुविचारणा, वहाँ प्रगटे सुखदाय ।।४०।।
जब प्रगटे सुविचारणा, तब प्रगटे निजज्ञान ।
ज्ञान से क्षय मोह हो, पावे पद निर्वाण ।।४१।।
उपजे वह सुविचारणा, मोक्षमार्ग समझाय ।
गुरु-शिष्य संवाद से, षद्पद यहाँ कहाय ।।४२।।

* * *